शिक्षा निदेशालय

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली

मूल्य परक प्रश्न पर आधारित अतिरिक्त सहायक सामग्री

वर्ष 2012–2013

विषय – अर्थशास्त्र

कक्षा – बारहवीं

मार्गदर्शन :

डॉ0 सुनीता एस0 कौशिक

अतिरिक्त शिक्षा निदेशक (स्कूल/परीक्षा)

समन्वय :

श्रीमती रेनू सभरवाल

प्रधानाचार्या, रा.प्र.वि.वि. सूरजमल विहार

तैयारकर्ता :

1. संजीव यादव	प्रवक्ता	रा.व.मा. बाल विद्यालय, घोंडा
2. श्री एस. पी. एस. राठी	प्रवक्ता	रा.प्र.वि.वि. शालीमार बाग
3. श्री अजय कुमार	प्रवक्ता	रा.प्र.वि.वि. नन्द नगरी

4. सुश्री डेजी गुप्ता	प्रवक्ता	रा.व.मा.बालिका. वि., विवेक विहार
5. श्री बी. सी. ठाकुर	प्रवक्ता	रा.प्र.वि.वि. सूरजमल विहार

भाग–क

नोटः प्रश्न संख्या 4,5,9,12,16 व 19 एक अंक के हैं तथा अन्य प्रश्न 3/4 अंक के हैं।

प्र01. एक अर्थव्यवस्था अपने मानवीय संसाधनों की उत्पादकता को किस प्रकार बढा सकती है ?

प्र02. विलुप्त होते प्राकृतिक संसाधनों को देखते हुए उत्पादन में निरन्तर उपलब्धता बनाये रखने के लिये अर्थव्यवस्था को क्या प्रयास करने चाहिये ?

प्र03. एक अध्यापक की आय के निम्न स्रोत हो सकते हैं

- स्कूल में अध्यापन करके रु 40000 कमा सकता है।
- घर में टयूशन या कोचिंग देकर रु 50000 कमा सकता है।
- सहायक पुस्तक लिखकर रु 60000 कमा सकता है।

आपके विचार में अध्यापन की अवसर लागत क्या है ? उसे अध्यापन कार्य क्यों चुनना चाहिये ?

प्र04. एक अल्प विकसित अर्थव्यवस्था में संसाधनों के कुशलतम प्रयोग की आवश्यकता अधिक क्यों है ?

प्र05. एक किसान को गेहूँ की तुलना में अफीम के उत्पादन में अधिक लाभ होता है, किन्तु अर्थव्यवस्था में अकाल को स्थिति में उसे किस फसल का उत्पादन करना चाहिये ?

प्र06. भारत में उर्जा संकट की आर्थिक समस्या क्यों बढ रही है ?

प्र07. शिक्षा/ ज्ञान की उपलब्धता पर ह्रासमान सीमान्त उपयोगिता का नियम किस प्रकार लागू होगा ?

प्र08. बिजली की मांग में वृद्वि हो रही है किन्तु संसाधनो की कमी के कारण बिजली की पूर्ति में वृद्वि नहीं की जा सकती । किन्ही दो उपायों को सहायता से समझाइये कि बिजली की मांग में किस प्रकार कमी की जा सकती है ?

प्र09. मांग के नियम के अनुसार कीमत बढने पर मांग कम हो जाती है किन्तु पैट्रोल की कीमत बढने पर उसकी मांग निरन्तर बढ रही है स्पष्ट कीजिये ?

प्र010. पैट्रोल की कीमत अधिक होने के बाद भी इसकी मांग बहुत अधिक है पैट्रोल की मांग को किस प्रकार कम किया जा सकता है ?

प्र011. एक चिडियाघर का प्रबन्धक संप्राप्ति बढाना चाहता है तो प्रवेश शुल्क में वृद्वि अथवा कमी करना उचित होगा स्पष्ट कीजिये ?

प्र012. भारतीय रेल का एकाधिकार होने के बावजूद भी पिछले कई वर्षो से सामान्य यात्री किराया नहीं बढाया गया है क्यों ?

प्र013. प्लास्टिक उद्योग का सकल देशीय उत्पाद में बढा योगदान होने के बावजूद इसे कल्याण का सूचक क्यों नहीं माना जा सकता ?

प्र014. दिल्ली में गुटखे की बिक्री पर सरकार द्वारा लगाए गये प्रतिबन्ध से बाजार सन्तुलन पर पडने वाले श्रंखला प्रभावों की व्याख्या कीजिये ?

प्र015. शराब जैसे हानिकारक पदार्थों की पूर्ति को नियन्त्रित करने के लिये कर नीति किस प्रकार प्रभावशाली हो सकती है ?

प्र016. यद्यपि अल्पाधिकार में कुछ (एक से अधिक) फर्मे होती है फिर भी वे एकाधिकार का लाभ उठाते है क्यों ?

प्र017. आइसक्रीम की बिक्री की कमी की स्थिति होने पर आइसक्रीम निर्माता को उत्पादन में कमी करने के लिये अपने परिवर्ती कारकों में कमी करना चाहिये अथवा स्थिर कारकों में ? कारण सहित व्यारव्या कीजिये ?

प्र018. विश्व में कृषि भूमि स्थिर कारक की उपलब्धता सीमित है। किन्तु खाद्यान्नों की बढती मांग के कारण क्या यह सम्भव है कि परिवर्ती कारकों जैसे बीज उर्वरक आदि की मात्रा में निरन्तर वृद्धि करके खाद्यान्नों की आवश्यक पूर्ति को बढाया जा सकता है व्यारव्या कीजिये ?

प्र019. चीनी की मांग बढने पर इसकी बाजार कीमत सामान्यतः बढ जाती है। चीनी की पूर्ति में क्या परिवर्तन किया जाये कि चीनी की कीमत स्थिर रहे ?

प्र020. रसोई गैस की कीमत में निरन्तर वृद्धि होने के बाबजूद उपभोक्ताओं द्वारा की जाने वाली मांग में कमी नहीं ही रही है, तो कारण सहित बताइये कि रसोई गैस की मांग की लोच क्या होगी ?

भाग- ख

नोटः प्रश्न संख्या 1,2,3,21,22, व 23 1 अंक के हैं शेष प्रश्न 3/4 अंको के हैं।

प्र01. बाढ पीडितो को सरकार द्वारा दिया गया मुआवजा सामाजिक कल्याण हेतु एक सराहनीय प्रयास है किन्तु इसे राष्ट्रीय आय में क्यों शामिल नहीं किया जा सकता है। ?

प्र02. कौन सा देश अधिक प्रगति कर रहा है। इसका अनुमान सकल देशीय उत्पाद के आधार पर नही लगाया जा सकता है क्यों ?

प्र03. सकल देशीय उत्पाद की गणना करते समय पर्यावरण को क्षति पहुँचाने वाले सामाजिक लागतों जैसे वैश्विक उष्णता, अम्लीय वर्षा आदि को शामिल नही किया जाता है। आपकी राय में इन लागतों को शामिल करना चाहिये । क्यों या क्यों नहीं ?

प्र04. निम्न सेवायें वस्तु एवं सेवाओं के प्रवाह में वृद्वि करती है।

अ. गृहणी की सेवाऐं

ब. फुरसत के समय की गई क्रियायें

स. स्वैच्छिक सेवाऐं

परन्तु उपरोक्त सेवाओं को राष्ट्रीय आय में शामिल क्यों नहीं किया जाता है ?

प्र05. पिछले कुछ वर्षों से भारत में सकल देशीय उत्पाद वृद्धि दर 6% से अधिक है किन्तु फिर भी जनसंख्या का लगभग 28% भाग निर्धनता रेखा के नीचे निर्वाह कर रहा है। उक्त संबंध में किन्ही दो कारणों की व्यारव्या कीजिये।

प्र06. मुद्रा स्फीति की स्थिति में व्यापारिक बैकों द्वारा किया गया साख निर्माण बैंको. के लिये लाभकारी है किन्तु अर्थ व्यवस्था पर इसका क्या दुष्प्रभाव पडता है।

प्र07. भारतीय बाजार में मुद्रा प्रसार मंहगाई का एक प्रमुख कारण है इसे रोकने के लिये रिर्जव बैंक द्वारा अपनाये गये उपायों में से किसी एक की व्याख्या कीजिये ?

प्र08. वस्तु विनिमय की तुलना में मुद्रा का प्रयोग किस प्रकार अधिक सुविधा जनक है ?

प्र09. बैंक के सभी ग्राहक अपना जमा धन एक ही समय पर निकलवाने की मांग करते है तो इस समस्या के समाधान में केन्द्रीय व्यापरिक बैंक की किस प्रकार सहायता करता है ?

प्र010. एक खिलौने बनाने वाली फर्म में कार्यरत श्रमिक को पारिश्रमिक के रूप में प्राप्त होने वाले खिलौनो की तुलना में मुद्रा के रूप में आय क्यों अधिक सुविधाजनक है। ?

प्र011. अत्यधिक मुद्रा प्रसार तीव्र आर्थिक विकास की आवश्यकता है किन्तु यह मुद्रा स्फीति को जन्म देता है कोई दो राजकोषीय उपाय लिखिये जिनसे मुद्रा प्रसार होने पर भी मुद्रा स्फीति को नियन्त्रित किया जा सके ?

प्र012. बचत भविष्य हेतू आर्थिक सुरक्षा प्रदान करती है किन्तु निवेश गुणक के दृष्टिकोण से यह अवगुण क्यों है ?

प्र013. अनैच्छिक रूप से बेरोजगार श्रमिकों का उपभोग व्यय आय के शून्य स्तर पर भी शून्य क्यों नहीं होता ?

प्र014. यदि अर्थव्यवस्था में नियोजित निवेश नियोजित बचतों से कम हो तो अर्थव्यवस्था पर इसका क्या प्रभाव पडेगा इनमें संतुलन लाने हेतु सरकार द्वारा क्या प्रयास किये जाने चाहिये ?

प्र015. आर्थिक मंदी के नियन्त्रण हेतु मुद्रा प्रसार एक प्रभावशाली उपाय है किन्तु इससे अर्थव्यवस्था पर ऋणों के भार में वृद्वि होती है किन्ही दो उपायों की व्याख्या कीजिये जिनसे मुद्रा प्रसार होने पर भी आर्थिक मंदी को नियन्त्रित किया जा सके ?

प्र016. भारत में बेरोजगारी एक व्यापक समस्या है। किन्तु यदि कुल मांग व कुल पूर्ति समान है तो क्या इसे सन्तुलन की अवस्था कहा जा सकता है ?

प्र017. भारत में आय व धन की विषमता के कारण जनसंख्या का बहुत बडा भाग निर्धनता रेखा के नीचे निर्वाह करता है। इस समस्या के समाधान हेतु बजट किस प्रकार सहायक हो सकता है।

प्र018. दिल्ली में फल एवं सब्जियों की कीमतों में पिछले कुछ समय में तेजी से वृद्वि हुई है इनकी कीमतों में कमी के लिये आप किन बजटीय उपायों का समर्थन करेंगे ?

प्र019. सभी अर्थव्यवस्थाओं में बजट घाटा असुन्तलन को जन्म देता है किन्तु भारत जैसे विकासशील देशों में इस पर निर्भरता सरकार की मजबूरी क्यो है ?

प्र020. निम्न को राजस्व व्यय तथा पूंजीगत व्यय में वर्गीकृत कीजिये अपने उत्तर के लिये उचित कारण दीजिये।

- सरकार द्वारा छात्रों को मुफत स्टेशनरी की आपूर्ति ।
- लाडली योजना के अन्तर्गत दी गयी आर्थिक सहायता।

- विद्यालय में कम्प्यूटर लैब के निर्माण पर किया गया व्यय
- सरकार द्वारा छात्रों के दोपहर के भोजन पर किया गया व्यय

प्र021. सन 1991 में भारत ने मुद्रा का अवमूल्यन क्यों किया ?

प्र022. क्या बाह्य प्रापण सेवाओं में वृद्धि भारत में विदेशी मुद्राओं की पूर्ति का महत्व पूर्ण स्रोत है ?

प्र023. माना वर्तमान विदेशी विनिमय दर 1 डालर = 50रु से घटकर 1 डालर = 60रू हो जाती है क्या इस स्थिति में भारतीय रिर्जव बैंक विदेशी विनिमय दर निधारित में हस्तक्षेप करना चाहेगा

प्र024. क्या भुगतान सन्तुलन के चालू खाते में घाटा एक चिन्ता का विषय है व्याख्या कीजिये ?

प्र025. एक अमेरिकी नागरिक भारत में इलाज के उद्देश्य से आता है उसी दौारन विदेशी विनिमय दर बढ जाती है। इसका उसके इलाज के खर्च पर क्या प्रभाव पडेगा ?

उत्तर

भाग– क

- मानव पूंजी निर्माण की सहायता से अर्थव्यवस्था अपनी उपलब्ध श्रमशक्ति को कुशल व प्रशिक्षित करके मानवीय संसाधनो की उत्पादकता को बढा सकती है। (रचनात्मक समझ का विकास)
- 1. नवीनीकरण स्रोतों के प्रयोग को बढावा।

  2. संसाधनों के अपव्यय को रोक कर ।

  3. प्राकृतिक संसाधनों के विकल्पों की खोज।

  4. प्राकृतिक संसाधनों के कुशलतम_एंव सावधानी पूर्वक प्रयोग के लिये जागरूकता का प्रसार करना (पर्यावरण संरक्षण)
- अ. सहायक पुस्तक लिखकर रु 60000 कमाना

ब. अध्यापन कार्य उसे इसलिये चुनना चाहिये क्योंकि ऐसा करने से अधिकतम समाज कल्याण होगा। (सामाजिक कल्याण)

- अल्पविकसित अर्थव्यवस्था में विकास सम्बन्धी आवश्यकतायें अधिक होती हैं जिन्हें उसे अपने सीमित संसाधनों से पूरा करना पडता है। (गहन सोच)

- गेहूँ का उत्पादन, क्योंकि अकाल की स्थिति में देश को अफीम की तुलना में खाद्यान्न की अधिक आवश्यकता होती है। (सामाजिक कल्याण)
- क्योंकि इसकी मांग इसकी पूर्ति से अधिक है। (शक्ति के कुशलतम प्रयोग के प्रति जागरूकता)
- शिक्षा/ज्ञान की उपल्ब्धता पर ह्रासमान सीमान्त उपयोगिता नियम लागू नहीं होता क्योंकि ज्ञान एवं शिक्षा प्राप्ति के लिये किया गया प्रत्येक प्रयास इसकी उपयोगिता में बृद्धि करता है। (विश्लेषणात्मक सोच)
- 1. उर्जा की बचत करने वाले बिजली उपकरणों का प्रयोग करके ।

  2. उर्जा के अन्य वैकल्पिक प्रयोग जैसे सौर उर्जा का प्रयोग करके। (पर्यावरण संरक्षण)
- क्योंकि पैट्रोल एक अनिवार्य वस्तु है और उसकी पूर्ति सीमित है। (गहन सोच)
- अ. कार पूलिंग करके

  ब. सार्वजनिक वाहन का प्रयोग करके

  स. कम दूरी के लिये साईकिल का प्रयोग करके।

  द. पैट्रोल के वैकल्पिक एंव नवीन स्रोतों जैसे सौर उर्जा से चालित वाहन का प्रयोग करके।

(संसाधनों के कुशलतम प्रयोग के प्रति जागरूकता)

- अ. प्रवेश शुल्क में कमी करने पर दर्शकों की संख्या में वृद्धि होगी जिससे कुल संप्राप्ति में वृद्धि होगी

  ब. यदि प्रबन्धक प्रवेश शुल्क में वृद्धि करके संप्राप्ति को बढाने का प्रयास करता है तो दर्शकों की संख्या में कमी होने से कुल संप्राप्ति में कमी आयेगी ।

(समस्या निराकरण)

- सामाजिक कल्याण के लिये भारतीय रेलवे भारत का एक महत्वपूर्ण सार्वजनिक संस्थान है जिसका ध्येय लाभ कमाने से ज्यादा सामाजिक कल्याण करना है। (सामाजिक कल्याण)
- प्लास्टिक उद्योग द्वारा उत्पादित पदार्थ हमारे पर्यावरण को क्षति् पहुँचाते है क्योंकि यह पर्यावरण में समाहित नहीं हो पाते तथा इनके उत्पादन से वायु प्रदूषण बढता है । (पर्यावरण संरक्षण)

- दिल्ली में गुटखे की बिक्री पर सरकार द्वारा प्रतिबन्ध लगाने से इसका उत्पादन करने वाली फर्मो द्वारा उत्पादन बन्द करके अपने संसाधनों को अन्य सम्बन्धित उत्पादों की पूर्ति हेतु प्रयोग किया जायेगा इसकी और गुटखे के उपभोक्ताओं द्वारा की जाने वाली गुटखे की मांग में कमी आयेगी इस प्रकार गुटखे जैसे स्वास्थ्य के लिये हानिकारक पदार्थों की मांग व पूर्ति दोनों में कमी आयेगी ।

(सामाजिक स्वास्थय सचेतता)

- शराब जैसे हानिकारक पदार्थों की पूर्ति को नियन्त्रित करने के लिये सरकार द्वारा की गयी कर वृद्धि से इसकी लागत व संप्राप्ति का अन्तर कम हो जायेगा जिससे उत्पादन के लाभ कम हो जायेंगे और

शराब की पूर्ति कम हो जायेगी। (सामाजिक स्वास्थय सचेतता)

- वे कुछ फर्में व्यापार गुट का निर्माण कर लेती हैं तथा कीमतों पर अपनी मर्जी के मुताबिक नियन्त्रण कर सकती है। (गहन सोच)
- आइसक्रीम की बिक्री में कमी होने पर उसके लाभ में कमी आयेगी जिससे वह उत्पादन लागतों को नियन्त्रित करने का प्रयास करेगा किन्तु अल्पकाल में स्थिर कारकों में परिवर्तन करना सम्भव नहीं है अतः वह परिवर्ती कारकों की इकाइयों में कमी कर देगा। (विश्लेषणात्मक समझ)
- विश्व में कृषि योग्य भूमि सीमित है तथा परिवर्ती कारकों की मात्रा में निरन्तर वृद्धि से एक आदर्श संयोग तक हो कृषि उत्पादन में वृद्धि सम्भव है। आदर्श संयोग प्राप्त करने के उपरान्त ऋणात्मक प्रतिफल नियम लागू होगा । (गहन सोच)
- चीनी की मांग बढने पर यदि चीनी की पूर्ति में समान अनुपात में वृद्धि की जाती है तो चीनी की कीमत स्थिर रहेगी। (समस्या निराकरण)
- रसोई गैस की मांग बेलोचदार होगी क्योंकि कीमत बढने पर भी रसोई गैस की मांग पर कोई प्रभाव नही पड रहा है। (गहन सोच)

भाग- ख

- क्योंकि यह हस्तान्तरण भुगतान है। ज्ञान का अनूप्रयोग
- क्योंकि देश की प्रगति की अनुमान प्रति व्यक्ति आय तथा आय के वितरण के आधार पर लगाया जा सकता है। ना कि सकल देशीय उत्पाद के आधार पर। (गहन सोच)
- हॉ, पर्यावरण की क्षति से लोगों की जीवन गुणवत्ता प्रभावित होती है। नहीं ,इसको मुद्रा में मापना अत्यन्त कठिन कार्य है। (सकल देशीय उत्पाद की सामाजिक लागत के प्रति जागरूकता)
- इन सेवाओ को राष्ट्रीय आय में सम्मलित नहीं किया जाता क्योंकि इनसे सम्बन्धित ऑकडे उपलब्ध नही है तथा इन सेवाओं की मौद्रिक माप कठिन है। (ज्ञान का अनुप्रयोग)
- 1. सकल देशीय उत्पाद का असमान वितरण

2. कीमत स्तर में वृद्धि (सामाजिक जागरूकता)

- व्यापारिक बैंको के द्वारा किये जाने वाले मुद्रा निर्माण से अर्थव्यवस्था में मुद्रा पूर्ति में वृद्धि होगी जिससे अत्याधिक मांग की स्थिति उत्पन्न हो जायेगी। परिणामस्वरूप कीमत स्तर में और अधिक वृद्धि होगी। (आर्थिक जागरूकता)
- निम्न में किन्हीं एक की व्याख्या-
  - बैंक दर
  - नकद आरक्षित अनुपात
  - वैधानिक तरलता अनुपात (गहन सोच)
- मुद्रा के किसी एक कार्य की व्याख्यां (समानुभूति)
- केन्द्रीय बैंक के अंतिम आश्रय दाता कार्य की व्याख्या। (विश्लेषणात्मक सोच)
- खिलौनो में सर्वग्राहयता का गुण नहीं पाया जाता किन्तु मुद्रा में सर्वग्राहयता के गुण के कारण मुद्रा की सहायता से अपनी आवश्यकता की किसी भी वस्तु व सेवा को खरीद सकता है उसे आवश्यकताओं के दोहरे संयोग की समस्या का सामना नहीं करना पडेगा। (समानुभूति)
- राजकोषीय उपाय
  - करों में वृद्धि
  - सार्वजनिक व्यय में कमी (गहन सोच)

- बचतों में होने वाली वृद्धि से चलन में मुद्रा की पूर्ति कम हो जाती है यह अभावी मांग की स्थिति को उत्पन्न कर देता है। परिणामस्वरूप निवेशगुणक की क्रियाशीलता में कमी आती है।

  (विश्लेषणात्मक सोच)

- अनैच्छिक रूप से बेरोजगार श्रमिक का उपभोग व्यय आय के शून्य स्तर पर भी शून्य नहीं होता क्योंकि वह अपनी अनिवार्य आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु न्यूनतम स्वायत्त उपभोग अवश्य करता है । (समानुभूति)

- यदि अर्थव्यवस्था में नियोजित निवेश नियोजित बचतों से कम है तो अर्थव्यवस्था में अभावी मांग की स्थिति का जन्म होगा जिससे उत्पादको के पास बिना बिके माल का स्टॉक बढ जायेगा इस स्थिति में समग्र मांग के स्तर को बढाने के लिये मौद्रिक व राजकोषीय उपाय अपनाने चाहिये। (विश्लेषणात्मक सोच)

- 1. बैंक दर में कमी

  2. वैधानिक तरलता अनुपात में कमी

  - प्रतिभूतियों की खरीद (गहन सोच)

- नहीं, क्योंकि यह अल्प रोजगार संतुलन की अवस्था है। (समस्या निराकरण)

- भारत में आय व धन की विषमता को दूर करने के लिये बजट के अर्न्तगत प्रगतिशील कर प्रणाली को आधार बनाया जा सकता है तथा निर्धन लोगों को सरकार प्रत्यक्ष रूप से आर्थिक

सहायता प्रदान करके सस्ती दरों पर सामाजिक सुविधाओं जैसे शिक्षा स्वास्थ्य खाद्यान्न आदि उपलब्ध करा सकता है। (समस्या निराकरण)

- फल व सब्जी के उत्पादको को आर्थिक सहायता प्रदान करके कीमत को कम कर सकते है। सार्वजनिक व्यय में वृद्धि करके सरकार सार्वजनिक वितरण प्रणाली की सहायता से उपभोक्ता को फल एवं सब्जीयों को सस्ती दरों पर उपलब्ध कराये। (समस्या निराकरण)
- भारत जैसे विकासशील देशों में प्रति व्यक्ति आय निम्न होने के करण सरकार की कर प्राप्तियों अल्प होती है किन्तु दूसरी और विकास सम्बन्धी व्यापक जरूरतो के कारण सरकार को अधिक सार्वजनिक व्यय करने पडते है जिससे बजट घाटों पर निर्भरता सरकार की विवशता बन जाती है। (आर्थिक जागरूकता)
- 1,2,4, राजस्व व्यय है क्योंकि इनसे न तो परिसंपत्तियों का निर्माण हो रहा है न हो दायित्वों में कमी हो रही है । 3, पूंजिगत व्यय है क्योंकि इससे सरकार की परिसम्पत्ति में वृद्धि हो रही है। (विश्लेषणात्मक सोच)
- सन 1991 में भारत ने अपनी मुद्रा का अवमूल्यन भारत में विदेशी मुद्रा के प्रवाह को बढाने के लिये किया । (विश्लेषणात्मक सोच)
- हाँ क्योंकि यह सेवाओं के निर्यात की तरह है जो कि विदेशी मुद्रा का एक अच्छा स्त्रोत है । (गहन सोच)

- आयातकों के हित को ध्यान में रखते हुये भारतीय रिर्जव बैंक को विदेशी विनिमय दर के निर्धारण में हस्तक्षेप करना चाहिये। (गहन सोच)

- नहीं चालू खाते में घाटे को यदि पूंजीगत खाते से पूरा कर लिया जाता है उस स्थिति में कोई समस्या उत्पन्न नही होगी लेकिन यदि पूंजीगत खाते में घाटे की स्थिति हो तो चालू खाते की घाटा पूर्ति निम्न स्त्रोतों से की जाती है
  - विदेशी मुद्रा कोष में कमी
  - विदेशी ऋण (विश्लेषणात्मक सोच)
- इलाज पर किया जाने वाला खर्च कम हो जायेगा क्योंकि विदेशी विनिमय दर के बढने से विदेश विनिमय की क्रयशक्ति बढ जायेगी। (समानुभूति)